जुलजनाह

आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यदुल उलमा सैय्यद अली नक़ी ताबा सराह

जिस तरह आदम (अ0) की औलाद में ख़ुदा ने ऐसे इन्सान पैदा किये जो अपनी क़ाबिले क़द्र ख़ुसूसियतों के सबब से दुनिया में हमेशा–हमेशा के लिए अपना नाम छोड़ जाएँ इसी तरह आलमे काएनात में दूसरी क़िस्म की चीज़ों के अन्दर भी ऐसे–ऐसे नमूने पैदा किये हैं जिनके आला सिफात उस जिन्स के लिए फख़्र व नाज़ का सबब बन सकें।

क़दरदानी हर चीज़ की उसके लिहाज़ से होना चाहिए। हर पिछली चीज़ जिससे ऐसे वाक़ेआत का ताल्लुक़ हो जो आइन्दा नसले इन्सानी के लिए सबक़ देने वाले हों वह उसकी हक़दार है कि उसकी याद हमेशा ताज़ा रखी जाए।

क़द्र के क़ाबिल सिफत हर शै में क़द्र के क़ाबिल है उसमें किसी मज़हब व मिल्लत का फ़र्क़ नहीं है। एक दरयादिल साहबे जूद व सख़ा इन्सान अपनी ख़ुसूसी सिफत के बाअिस हर इन्सान की मुहब्बत का सबब है। एक सच्चाई पर जान देने वाला जिगर वाला शख़्स हर इन्सान की अक़ीदत का मरकज़ होता है। एक नेक दिल, ख़ुश अख़लाक़ आदमी की हर एक तारीफ करेगा। यह तमाम इन्सानी सिफतें हैं जिनकी क़द्र करने वाला हर इन्सान होता है। यह चीज़ें मज़हब व मिल्लत के तफरक़े से बिलकुल अलग हैं।

इसी तरह ग़ैर इन्सानी जानदार मख़लूक़ में इम्तियाज़ी सिफात हर शख़्स के ध्यान का बाअिस हो सकते हैं। मुहज़्ज़ब और मुतमद्दिन जमातें यादगार क़ायम करती हैं और याद ताज़ा भी रखती हैं। इन जानवरों की भी जो किसी अहम वाक़ेए में कोई नुमायाँ हैसियत रखते हों।

आगरा के शाही क़िले के बाहर सय्याह को घोड़े का मुजस्समा ज़रूर नज़र आएगा। सीने तक ज़मीन के अन्दर और सिर्फ सर व गर्दन उसकी बाहर दिखती है। इसको जुस्तजू ज़रूर दरयाफ्त करने पर मजबूर करेगी। ''यह घोड़ा कैसा है?'' इसे मालूम होगा कि यह घोड़ा एक बहादर शेरदिल इन्सान को क़िले की ऊपरी दीवार से लेकर फाँदा था और सीने तक रेग में धंस गया था।

इससे इन्सानी हिम्मत पर क्या असर पड़ता है? इन्सान के दिल पर कौन सा नक़्श क़ाएम होता है? इन्सान को क्या सबक़ हासिल होता है? बहरहाल ऐसा ही कुछ था जिसे बतौर यादगार मुजस्समे की सूरत में क़ाएम रखने की ज़रूरत महसूस की गयी।

कम से कम ख़ुद इन्सान की पहचान की क़द्र साबित होगी कि वह जानवर की भी क़द्र करता है। अगर उससे कोई नुमायाँ वाक़ेआ सामने आ जाए।

अख़्बार पढ़ने वाला तबक़ा बेख़बर न होगा उन वाक़ेआत से जो रोज़ाना दूसरे मुल्कों में होते रहते हैं, जहाँ मालूम होता है कि हैवान भी क़द्र के क़ाबिल हो सकता है और इन्सान की इन्सानियत इस क़द्र को जानने पर मजबूर हो जाती है।

हैवानी नस्ल में ऐसी मख़्लूक़ की कमी नहीं है जो अपनी जिन्स के एतबार से बुलन्द सिफतों की हामिल हो, एक कुत्ता जो हैरतअंगेज़ वफादारी का इज़हार करता है इस क़ाबिल समझा जाता है कि उसके मरने पर इज़हारे ग़म व अलम के लिए हज़ारों रुपये ख़र्च कर दिये जाएँ, जलसे हों और इज़्हारे रंज किया जाए। जापान के मुल्क का यह वाक़ेआ अभी कुछ ज़्यादा दूर नहीं हुआ है।

मज़हबी रिवायात में अस्हाबे कहफ के कुत्ते का ज़िक्र कुर्आने मजीद तक में मौजूद है और वह भी उन्हीं ख़ुसूसियतों में शरीक किया गया जो अस्हाबे कहफ के लिए हासिल हैं वह जदीद दुनिया की जदीद तहज़ीब का कारनामा था और यह क़दीम तारीख़ का क़दीम वरक़।

एक मुद्दत तक ईसाइयों की गिरजाओं में उस सुम की ताज़ीम हुई है जो हज़रत ईसा की सवारी के हैवान का उनके यहाँ समझा जाता था।

इस्लाम में उस दुम्बे की यादगार क़ाएम की गयी जो हज़रत इब्राहीम (अ0) के पास उनके फ़र्ज़न्द इस्माईल (अ0) के फ़िदये की कुर्बानी के लिए आया था और हमेशा–हमेशा के लिए बक़रईद में कुर्बानी का हुक्म देकर उसकी शबीह बनाने का क़ानून जारी कर दिया गया।

मुसलमानों की बड़ी तादाद ने उस ऊँट और महमल की यादगार क़ाएम की जिस पर उम्मुलमोमिनीन हज़रत आएशा सवार हुई थीं और वह अब तक मिस्र से जो अरबी तहज़ीब व तमद्दुन का गहवारा बना हुआ है वह महमल मक्क–ए–मोअज़्ज़मा भेजी जाती रही है।

हिन्दू क़ौम तो बराबर जानवरों की क़द्र जानने वाली रही है, वह हर उस जानवर को जिससे नौए इन्सानी को फाएदे पहुँचें हैं, क़द्र की निगाह से उस हद तक देखती है जिसे इबादत की हद तक समझा जा सकता है।

अगरचे इबादत अल्लाह के अलावा की जाएज़ नहीं है मगर इन्सान को पिछले वाक़ेआत की याद ताज़ा रखने के लिए ज़रूरत है कि वह उन तमाम चीज़ों की याद बाक़ी रखे जिनके साथ उन वाक़ेआत का ताल्लुक़ है।

ईसाईयों ने ग़ैर जानदार चीज़ वह सूली जिस पर हज़रत यसूअ मसीह (अ0) को उनके ख़याल में चढ़ाया गया है आज तक सलीब की शक्ल में क़ाएम रखी है जो हर गिरजाघर में मौजूद रहती है और हर ईसाई की गर्दन में लटकी रहती है।

इस्लामी रिवायात में हज़रत इब्राहीम (अ0) के खड़े होने की जगह (मक़ामे इब्राहीम अ0) मुसल्ला क़रार दिया गया कि वहाँ लोग नमाज़ पढ़ें, वह पानी का चश्मा जो इस्माईल (अ0) के प्यास से परेशान होने की हालत में सामने आया था चाहे ज़मज़म के नाम से इन्तिहाई बरकत वाला क़रार दिया गया। कोहे सफा और मरवह को जहाँ हज़रत हाजरा पानी की तलाश में परेशान फिरीं थीं, दौड़ने की जगह बना दिया गया। इसके माने यह हैं कि अरकाने हज में शबीहें क़ाएम की गयीं, उन पिछले वाक़ेआत की जो अहम हस्तियों से ताल्लुक़ रखते हैं।

वह वाक़ेआत ज़िन्दा रखने के क़ाबिल हैं जो नस्ले इन्सानी के लिए अच्छे–अच्छे सबक़ देते हों, जो दिल में रहम व करम का शौक़ पैदा करते हों, जो वफादारी और नेक शेआरी की क़द्र बतलाते हों।

यह वाक़ेआत वह होते हैं जो अगरचे

किसी ख़ास क़ौम या जमात ही में वाक़े हुए हों लेकिन उनका फाएदा और नतीजा तमाम नस्ले इन्सानी के साथ एक ही हैसियत से ताल्लुक़ रखता है। इसलिए इनमें हरगिज़ कोई तफरीक़ नहीं होनी चाहिए। वह हरगिज़ फिरक़ा वाराना हैसियत नहीं रखते और न फिरक़ाबन्दी का बाअिस होते हैं। अगर उन्हें फ़िरक़ा बन्दी के तौर पर अदा किया जाए तो यह किसी ख़ास जमात की ग़लती होगी जिससे ख़ुद वाक़ेए के फाएदे की हैसियत और हमागीरी को नुक़सान पहुँचेगा इसलिए ख़ुद वाक़ेआ उस तर्ज़ेअमल का शक करने वाला होगा।

कर्बला का अहम वाक़ेआ जो 61 हिजरी में दसवीं मोहर्रम को पेश आया वह अगरचे मज़हबी रिवायात के एतबार से एक ख़ास जमात यानी मुसलमानों के साथ ताल्लुक़ रखता है लेकिन हक़ीक़त में वह अपने नतीजे के एतबार से तमाम दुनिया की तारीख़ का एक अहम सबक़ लेने वाला सहीफा है। वहाँ तमाम इन्सानी सिफतें व फ़ज़ीलतें अमली तौर पर पेश की गयीं थीं, वहाँ रहमो करम, अख़लाक़ व मुरव्वत, सिबाते क़दम और इस्तेक़लाल, तहम्मुल व ज़ब्ते नफ्स, ईसार व हमदर्दी, हक़ परवरी और हक़ीक़त कोशी, यह सब और इनके अलावा तमाम इन्सानी मुकम्मल सिफात थे जो मुजस्सम तौर पर सामने लाए गये।

इसलिए हरगिज़ कर्बला के वाक़ेए की यादगार क़ायम करने और उस वाक़ेए से सही सबक़ हासिल करने के तन्हा मुसलमान हक़दार नहीं हैं बल्कि पूरी इन्सानियत इस वाक़ेए के अहम नुकात और तालीमात से बहरामन्द होने का मौक़ा रखती है।

हुसैन (अ0) की ज़ात दुनिया के लिए नुक़त–ए–इत्तेहाद है। हुसैन (अ0) की ज़ात ही आलम के लिए मरकज़े इज्तेमाअ है। हुसैन (अ0) की ज़ात तमाम दुनियाए इन्सानियत के लिए पैग़ामे हयात है। हुसैन (अ0) की ज़ात तमाम नसले बशरी के लिए सामाने नजात है।

दुनिया हज़ारों मसलों में इख़्तेलाफ रखे, आपस में दस्तो गिरेबाँ हो मगर जब शहीदे कर्बला हुसैन (अ0) की हस्ती सामने आएगी तो यहाँ आकर तमाम फ़र्क़ दूर हो जाएँगे, यहाँ किसी इख़्तिलाफ की गुन्जाइश न होगी। किसी मज़हब का मानने वाला हो, किसी मिल्लत का पैरो हो मज़हब से काम नहीं बिलकुल ला मज़हब इन्सान हो, तबअी हो, नेचरी हो, दहरी हो जो भी हो लेकिन अगर सीने में दिल और दिल में एहसास रखता है तो वाक़े–ए–कर्बला से मुतास्सिर हुए बग़ैर नहीं रह सकता है।

मैं सच कहता हूँ कि हुसैन (अ0) की ज़ात तमाम इख़्तिलाफात से ऊपर है। शीओं को यह हक़ नहीं है कि वह यह कहें कि हुसैन (अ0) सिर्फ हमारे हैं। मुसलमानों को यह हक़ नहीं कि वह यह कहें कि हुसैन (अ0) सिर्फ हमारे हैं। हक़ीक़त में हुसैन (अ0) तमाम इन्सानी दुनिया के हैं। उन्होंने वह काम किया है जिसने मिटती हुई इन्सानियत के निशानों को उभार दिया। जिसने दम तोड़ती हुई इन्सानियत को नए सिरे से ज़िन्दा कर दिया, जिसने इन्सानियत की डूबती हुई कश्ती को साहिले मुराद तक पहुँचा दिया। उन्होंने अपनी जान देकर हमेशा–हमेशा के लिए वह नमूना क़ाएम कर दिया जिसकी पैरवी हमेशा के लिए मेयारे इन्सानयित रहेगी।

यक़ीनन ऐसे अहम वाक़ेआत की यादगार क़ाएम करना हर उस सूरत से जो उस वाक़ेए की याद बाक़ी रखने में फाएदे वाली साबित हो सके

एक अहम इन्सानी फ़र्ज़ है।

कर्बला में जिस तरह हुसैन इब्ने अली (अ0) के साथी इन्सानों ने वह कारे नुमायाँ किए जिनकी मिसाल सफह–ए–तारीख़ पर नहीं मिल सकती। इसी तरह दूसरे ज़ीरूह यानी जानवर को भी यह फख़्र है कि उसने एख़लास व वफा का ऐसा नमूना पेश किया जो तारीख़ में यादगार रहेगा।

वह हुसैन का घोड़ा जो ''ज़ुलजनाह'' के नाम से मौसूम था उसने अपने मालिक का साथ उस आख़री वक़्त तक दिया जबकि कोई मुईन व मददगार, कोई ख़बर लेने वाला और ख़बर पहुँचाने वाला बाक़ी न था किसे नहीं मालूम कि कर्बला में फर्ज़न्दे रसूल (स0) के लिए पानी का क़हत हो गया था। भला कौन कह सकता है कि छोटे बच्चों के लिए जिसमें अली असग़र का सा दूध पीता बच्चा भी हो, लब तर करने के लिए पानी न मौजूद हो तो घोड़े पानी से सैराब किये जा सकते होंगे?

हरगिज़ नहीं, अगर बच्चों के लिए सबसे आख़री क़तरा पीने के लिए पानी का सर्फ हो सकता है तो घोड़े उसके पहले से प्यासे होंगे इसके बाद सुब्ह से सेपहर के वक़्त तक बराबर सैय्यदुश्शोहदा को अरब की तेज़ धूप, गर्म हवा में ख़ेमागाह से मैदाने जंग तक (जो काफी दूर था) आना और जाना, हर अज़ीज़ की रुख़सत के वक़्त ख़ेमे के पास होना और जाँकनी के वक़्त मैदाने जंग में उसके सरहाने। यह तमाम आमद व रफ्त घोड़े की पुश्त पर होती थी, फिर हमले, लड़ाई और वह क़यामतख़ेज़ लड़ाई जिसकी मिसाल तारीख़ में नहीं है।

सबसे पहले आग़ाज़े जंग तीरों की बारिश ही से हुआ था, इसके बाद ज़ोहर से घण्टा ढेढ़ घण्टा पहले जब तमाम यज़ीदी फौज ने एकसाथ तीरों की बारिश की है और हज़ारों तीरों की बाढ़ें एक साथ चली हैं तो तारीख़ गवाह है कि उसकी सबसे बड़ी ज़द घोड़ों ही पर हुई थी चुनानचे फौजे हुसैनी के ज़्यादा घोड़े उसमें पै हो गये और अक्सर सवार पैदल हो गये। कौन कह सकता है कि उस वक़्त ज़ुलजनाह को कोई ज़ख़्म नहीं आया। वह वक़्त जबकि हज़ारों की फौज के सैलाब में एक तन्हा हुसैन (अ0) डूबते थे और दुश्मनों को मुन्तशिर करके बाहर आते थे, नेज़ों के हमले भी थे और तलवारें भी, तीर भी थे और तबर भी उस वक़्त क्या घोड़ा हुसैन (अ0) का महफ़ूज़ था? और क्या दुश्मनों के घबराए हुए हरबे जो बेताबी के आलम में पड़ते थे वह मरकब को साफ बचा ले जाते थे?

जंग का वाक़िफकार यक़ीन के साथ कह सकता है कि इस अज़ीमुश्शान जंग में एक घोड़ा हुसैन (अ0) का एक बहादर जाँनिसार और एक वफाशिआर मुईन व मददगार का काम अन्जाम दे रहा था वह यक़ीनन दुश्मनों को ज़द पर लाता था, वार ख़ाली करता था और गिरे हुए दुश्मन को रौंदता भी था और शिकस्ता भी करता था।

इस गेरुदार, इस जंग जिदाल, इस हंगाम–ए–क़िताल में घोड़े की प्यास, उसके सीने का इल्तेहाब, उसके जिगर की सोज़िश, उसके एहसास से ताल्लुक़ रखती है मगर वह वक़्त यादगार है कि जब फौज से मैदान साफ हुआ, फ़ुरात का दामन बिलकुल ख़ाली हो गया, हुसैन (अ0) नहर के क़रीब आए, घोड़ा अपना नहर में डाल दिया और यह कहा या अपने तर्ज़े अमल से साबित किया कि ''ऐ मेरे बावफा! तू बहुत प्यासा होगा यह पानी मौजूद है अपनी प्यास बुझा ले।''

उस वक़्त कोई नहीं, फुरात की मौजें गवाही देंगी, साहिले फुरात शहादत देगा कि घोड़े ने अपनी गर्दन उठा ली थी, अपना सर बुलन्द कर लिया था, अपना मुँह बन्द कर लिया था। मतलब यह था कि मैं हरगिज़ पानी नहीं पियूँगा, जब तक आप इस पानी से सैराब न होंगे। हुसैन नहर से बाहर निकल आए और घोड़ा भी प्यासा निकला।

अब वह वक़्त आया जब घोड़े की तमाम कोशिशे जंग ख़त्म हो चुकी, जब उसकी पुश्त उसके राकिब से ख़ाली हो गयी। जब उसके मालिक को चारों तरफ से ख़ूँआशाम दुश्मनों ने घेर लिया, उस वक़्त उसके लिए हुसैन (अ0) की सबसे बड़ी ख़िदमत का वक़्त आया, उस वक़्त उसने वह काम अन्जाम दिया जो उसके लिए मख़सूस हो गया।

उसने एहसास किया कि अब मुदाफ़ेअत का कोई मौक़ा बाक़ी नहीं है, जंग का मैदान दुश्मनों से भरा है और यहाँ कोई दोस्त नहीं है, वह अभी जाँनिसारी व जाँफरोशी कर रहा था, जिहाद के रास्ते में हुसैन (अ0) का साथ दे रहा था, लेकिन अब जबकि उसका सवार अपनी मन्ज़िल तक पहुँच गया, जबकि रास्ते की मुसाफत ख़त्म हो चुकी, जबकि सवारी को कोई सवाल बाक़ी नहीं है तो उसने खुद अपने उस फर्ज़ का एहसास किया कि वह बेकस व बेबस औरतों को जो ख़ेमों में अपने वाली व वारिस की ख़बर की मुन्तज़िर थीं जाकर अपने मालिक की ख़बर पहुँचा दे।

उसने अपनी पेशानी ख़ून में तर की, वह सीधा ख़ेम–ए–हुसैन (अ0) के दरवाज़े पर पहुँचा, उसने हिनहिना कर अपनी आवाज़ अन्दर पहुँचाई। मुन्तज़िर सैय्यदानियाँ उसकी आवाज़ को सुनते ही दरवाज़े पर आ गयीं वह देखा जो पहले कभी न देखा था, उसका ख़ाली ज़ेन, उसकी रंगीन पेशानी, उसकी कटी हुई बागें, उसका ज़ख़्मी जिस्म, उसके जिस्म में पेवस्त तीर वह सब कुछ कह रहे थे जिसकी ख़बर देने वह दरवाज़े पर आया था।

यह थी वह आख़री ख़िदमत जो ज़ुलजनाह ने अन्जाम दी, और यह है वह यादगार वाक़ेआ जो इस यादगार जानवर के साथ ताल्लुक़ रखता है। यही वह यादगार है जो हुसैन इब्ने अली (अ0) की अज़ादारी के सिलसिले में ''ज़ुलजनाह'' की शबीह निकाल कर क़ाएम की जाती है।

''ज़ुलजनाह'' ज़िन्दा है जब तक हुसैन (अ0) का नाम ज़िन्दा है। अपने सवार की बदौलत भी हमेशा ज़िन्दा रहेगा और उसकी यादगार हमेशा क़ाएम रहेगी।

□ □ □

अक़वाले सैय्यदुश्शोहदा अलैहिस्सलाम

- किसी इमारत में हराम चीज़ों का इस्तेमाल न करो कि वह वीरानी का बाइस है।
- जो तुम्हारा दोस्त होगा वह तुम्हें बुरे कामों से बचाएगा।
- इंसान की इज़्ज़त इसमें है कि वह दूसरों का मोहताज न रहे।